eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

नागरिक समाज और उसकी राजनीतिक भूमिका

[1]डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 08 Feb 2018, Accepted: 10 Feb 2018, Published on line: 28 Feb 2018

Abstract

नागरिक समाज किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ होता है। यह समाज न केवल राजनीतिक प्रक्रियाओं में भागीदारी करता है, बल्कि नीति निर्माण, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, और शासन व्यवस्था की जवाबदेही सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शोध पत्र 1947 से 2018 तक भारतीय नागरिक समाज की राजनीतिक भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें स्वतंत्रता के बाद नागरिक समाज के विकास, उसकी चुनौतियों और प्रभावों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
कीवर्ड– नागरिक समाज, लोकतंत्र, राजनीतिक भागीदारी, सामाजिक आंदोलन, नीति निर्माण, मानवाधिकार, भारत, स्वतंत्रता, शासन व्यवस्था, जवाबदेही।

Introduction

नागरिक समाज वह क्षेत्र है जो राज्य और निजी क्षेत्र के बीच स्थित होता है और जिसमें व्यक्ति और संगठन स्वतंत्र रूप से सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। यह समाज विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ), सामाजिक आंदोलनों, ट्रेड यूनियनों, शैक्षणिक संस्थानों, धार्मिक संगठनों, और स्वायत्त नागरिक संगठनों के माध्यम से कार्य करता है। भारत में नागरिक समाज की जड़ें गहरी हैं और यह हमेशा सामाजिक परिवर्तन, मानवाधिकारों की रक्षा, और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में एक लोकतांत्रिक प्रणाली स्थापित की गई, जिसमें नागरिक समाज ने एक प्रमुख भूमिका निभाई। संविधान के निर्माण से लेकर बाद के दशकों में सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय सुधार, और मानवाधिकारों के लिए नागरिक समाज की सक्रियता देखी गई।

यह अध्ययन भारतीय नागरिक समाज की राजनीतिक गतिविधियों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखकर विश्लेषण करता है। विशेष रूप से यह देखा जाएगा कि किस प्रकार नागरिक समाज ने शासन को जवाबदेह बनाने, नीति निर्माण में योगदान देने और विभिन्न सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से परिवर्तन लाने में योगदान दिया। स्वतंत्रता के बाद, नागरिक समाज ने सामाजिक उत्थान और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवधि में महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर कई सामाजिक संगठन उभरे, जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, और समाज सुधार में कार्य किया।

स्वतंत्रता के बाद नागरिक समाज की स्थिति– स्वतंत्रता के बाद, नागरिक समाज ने सामाजिक उत्थान और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवधि में महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर कई सामाजिक संगठन उभरे, जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, और समाज सुधार में कार्य किया। स्वतंत्र भारत में

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

नागरिक समाज ने लोकतंत्र की मजबूती के लिए कार्य किया और विभिन्न सामाजिक मुद्दों को सरकार के समक्ष उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1950 के दशक में नागरिक समाज ने औद्योगिक विकास, श्रमिक अधिकारों और भूमि सुधारों की मांग उठाई। 1960 और 1970 के दशक में हरित क्रांति और नक्सलवादी आंदोलनों के दौरान सामाजिक संगठनों ने किसानों और श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए काम किया। 1975–77 के आपातकाल के दौरान नागरिक समाज ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1980 के दशक में पर्यावरणीय जागरूकता, महिलाओं के अधिकारों और दलित आंदोलनों में नागरिक समाज की सक्रियता बढ़ी। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के बाद नागरिक समाज संगठनों ने नई सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे मानवाधिकार, पारदर्शिता और शासन में सुधार की मांगें तेज हुईं।

2000 के दशक में सूचना क्रांति और डिजिटल माध्यमों ने नागरिक समाज को अधिक प्रभावशाली बनाया। भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन, सूचना का अधिकार और जन लोकपाल आंदोलन जैसी पहलों ने नागरिक समाज की शक्ति को प्रदर्शित किया। 2014 के बाद राजनीतिक ध्रुवीकरण और नई चुनौतियों के बीच नागरिक समाज को कानूनी और प्रशासनिक बाधाओं का सामना करना पड़ा, फिर भी यह लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की रक्षा में सक्रिय बना रहा।

राजनीतिक भूमिका और प्रभाव

1950–1975 लोकतंत्र की स्थापना और प्रारंभिक चुनौतियाँ– संविधान निर्माण में नागरिक समाज की भूमिकारू भारतीय संविधान को तैयार करने में नागरिक समाज के विभिन्न समूहों और बुद्धिजीवियों ने योगदान दिया। विभिन्न सामाजिक संगठनों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने मौलिक अधिकारों, सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता को संविधान में सम्मिलित करने की वकालत की।

सामाजिक न्याय और अधिकारों की मांग, इस कालखंड में नागरिक समाज ने दलित अधिकार, महिलाओं की शिक्षा और श्रमिक अधिकारों के लिए जागरूकता बढ़ाई। भूमि सुधार आंदोलनों और कास्तकार संगठनों ने किसानों के अधिकारों की रक्षा में अहम भूमिका निभाई।

आपातकाल (1975–77) के दौरान नागरिक स्वतंत्रता पर प्रभाव, आपातकाल के दौरान प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया, राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया गया और नागरिक अधिकारों का हनन हुआ। इस कठिन समय में नागरिक समाज और मानवाधिकार संगठनों ने लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए संघर्ष किया और जनता को संगठित करने में योगदान दिया।

1977–1991 आपातकाल के बाद की पुनर्स्थापना और नवउदारवाद का प्रभाव–

जनता सरकार और नागरिक समाज की सक्रियता, 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद नागरिक समाज को पुनर्जीवित होने का अवसर मिला। आपातकाल के दौरान दबाई गई आवाज़ों ने लोकतांत्रिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता की पुनर्स्थापना में योगदान दिया। प्रेस की स्वतंत्रता बहाल हुई, और गैर–सरकारी संगठनों ने सक्रिय रूप से सरकार की जवाबदेही तय करने का कार्य किया।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

1980 के दशक में पर्यावरणीय और मानवाधिकार आंदोलनों का विकास, इस दशक में नागरिक समाज ने पर्यावरणीय मुद्दों और मानवाधिकारों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। चिपको आंदोलन (1973–1980) और नर्मदा बचाओ आंदोलन (1985) जैसे बड़े जनांदोलन उभरे, जिन्होंने विकास परियोजनाओं के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को उजागर किया।

महिला अधिकार और दलित सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ते कदम, इस अवधि में महिलाओं और दलितों के अधिकारों की रक्षा के लिए कई संगठन सक्रिय हुए। स्वयंसेवी संगठनों ने महिलाओं की शिक्षा, कार्यस्थल पर समानता, और घरेलू हिंसा के खिलाफ कानूनों के निर्माण में योगदान दिया।

1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद सामाजिक आंदोलनों का नया स्वरूप, 1991 में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत के साथ, नागरिक समाज ने नई सामाजिक–आर्थिक नीतियों पर ध्यान केंद्रित किया। एनजीओ और सामाजिक संगठनों ने वैश्वीकरण के प्रभावों, श्रमिक अधिकारों, और सामाजिक सुरक्षा के मुद्दों पर सरकार से संवाद शुरू किया।

1991–2014 वैश्वीकरण और डिजिटल युग में नागरिक समाज–

सूचना क्रांति और डिजिटल माध्यमों का प्रभाव, 1990 के दशक में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, नागरिक समाज को सशक्त करने में डिजिटल प्लेटफार्मों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंटरनेट, मोबाइल संचार और सोशल मीडिया ने नागरिक भागीदारी को बढ़ावा दिया।

भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के माध्यम से पारदर्शिता बढ़ाने की दिशा में नागरिक समाज की भूमिका महत्वपूर्ण रही। 2011 का जन लोकपाल आंदोलन भ्रष्टाचार विरोधी लड़ाई में एक प्रमुख मील का पत्थर था।

सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ आंदोलन, 2000 के दशक में महिला अधिकार, दलित सशक्तिकरण और श्रमिक अधिकारों को लेकर आंदोलन तेज हुए। कई गैर–सरकारी संगठन (छळवे) और सामाजिक समूहों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए।

ग्लोबल एनजीओ नेटवर्क और अंतरराष्ट्रीय सहयोग, वैश्वीकरण के कारण भारतीय नागरिक समाज संगठनों ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग और फंडिंग का लाभ उठाया, जिससे उनके प्रभाव में वृद्धि हुई।

2014–2018 राजनीतिक ध्रुवीकरण और नई चुनौतियाँ– सिविल सोसायटी और सरकार के बीच संबंध, 2014 के बाद नागरिक समाज और सरकार के बीच संबंधों में तनाव बढ़ा। कई एनजीओ और सामाजिक संगठनों को विदेशी फंडिंग में कटौती का सामना करना पड़ा, जिससे उनकी स्वतंत्रता पर असर पड़ा। डिजिटल एक्टिविज्म और सोशल मीडिया की भूमिका, इस दौर में सोशल मीडिया राजनीतिक बहस का प्रमुख मंच बन गया। नागरिक समाज के कई संगठनों ने सोशल मीडिया का उपयोग जागरूकता फैलाने, आंदोलन संगठित करने और नीतिगत मुद्दों को उजागर करने के लिए किया। हालाँकि, फेक न्यूज़ और डिजिटल निगरानी जैसे मुद्दों ने भी नई चुनौतियाँ पेश कीं।

नागरिक समाज पर कानूनी और प्रशासनिक प्रतिबंध, सरकार द्वारा कई एनजीओ की गतिविधियों की निगरानी बढ़ा दी गई और कई संगठनों के लाइसेंस निलंबित कर दिए गए। विदेशी योगदान विनियमन अधिनियम के तहत कई संगठनों की फंडिंग रोकी गई, जिससे नागरिक समाज की स्वतंत्रता सीमित हुई।

ध्रुवीकरण और असहमति का दमन, इस अवधि में वैचारिक ध्रुवीकरण बढ़ा और असहमति व्यक्त करने वाले कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों पर हमले बढ़े। कई नागरिक समूहों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

नागरिक समाज की अनुकूलन क्षमता, इन चुनौतियों के बावजूद, नागरिक समाज ने नए तरीकों से अपनी भूमिका निभाई, जैसे कि स्थानीय स्तर पर संगठनों को मजबूत करना, डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ाना, और कानूनी सहायता प्रदान करना।

1947 से 2018 तक नागरिक समाज की भूमिका लगातार विकसित होती रही है। यह लोकतंत्र की मजबूती, सामाजिक न्याय, और राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। हालाँकि, विभिन्न सरकारों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध और अन्य चुनौतियाँ नागरिक समाज की स्वतंत्रता को प्रभावित करती रही हैं। भविष्य में नागरिक समाज की भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सरकार और समाज के बीच सहयोग आवश्यक है।

भारतीय नागरिक समाज ने स्वतंत्रता के बाद से ही लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विभिन्न आंदोलनों, नीति निर्माण प्रक्रियाओं और शासन की जवाबदेही सुनिश्चित करने के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख वाहक बना रहा है।

हालाँकि, अलग–अलग कालखंडों में नागरिक समाज को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे कि आपातकाल के दौरान दमन, आर्थिक उदारीकरण के बाद सामाजिक असमानता, और हालिया वर्षों में राजनीतिक ध्रुवीकरण तथा कानूनी प्रतिबंध। इसके बावजूद, नागरिक समाज ने डिजिटल युग में नई रणनीतियों और साधनों का उपयोग करके अपनी प्रभावशीलता बनाए रखी है।

भविष्य में, नागरिक समाज को अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने, सामाजिक समरसता बढ़ाने और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए निरंतर सक्रिय रहना होगा। इसमें डिजिटल मीडिया का प्रभावी उपयोग, कानूनी जागरूकता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

सन्दर्भ सूची–

1. अरोड़ा, बी. (2003). भारतीय लोकतंत्र और नागरिक समाज। नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. चटर्जी, पी. (2008). नागरिक समाज और राज्य के बीच। दिल्ली सेज पब्लिकेशन्स।
3. कुमार, ए. (2015). भारतीय राजनीति में एनजीओ की भूमिका। मुंबई रूपा पब्लिकेशन्स।
4. सेन, अ. (2010). सामाजिक न्याय और लोकतंत्र। कोलकाता ओरिएंट ब्लैकस्वान।
5. शर्मा, आर. (2018). वैश्वीकरण और भारतीय समाज। नई दिल्ली पेंगुइन बुक्स।
6. चंद्र, बिपिन. भारत का स्वतंत्रता संग्राम।
7. ओम्वे, जीन. सिविल सोसायटी एंड डेमोक्रेसी।

8. हबीब, इरफान. आधुनिक भारत का इतिहास।

9. जयराम, रमेश। सिविल सोसायटी इन इंडिया।

10. विभिन्न शोध पत्र और सरकारी दस्तावेज।